May I have your Attention Please..!

आंखें जो देखती है वह सब है मिटने वाले
चलना है निज वतन जहां के प्रभु है रहने वाले
अपनी नजर टिकाइए उस परमधाम पर
पल भर निकालिए प्रभु के भी नाम पर

13-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति

"मीठे बच्चे - अब इस मृत्युलोक का अन्त है, अमरलोक की स्थापना हो रही है, इसलिए तुम्हें मृत्युलोक वालों को याद नहीं करना है"

प्रश्नः- बाप अपने गरीब बच्चों को कौन सी स्मृति दिलाते हैं?

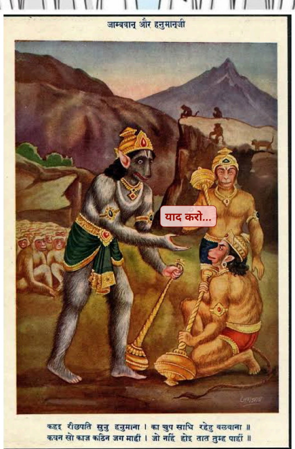

उत्तरः- बच्चे, जब तुम वाइसलेस (पवित्र) थे तो बहुत सुखी थे। तुम्हारे जैसा साहूकार दूसरा कोई नहीं था, तुम अपार सुखी थे। धरती, आसमान सब तुम्हारे हाथ में था। अब बाप तुम्हें फिर से साहूकार बनाने आये हैं।

गीतः- नयन हीन को राह दिखाओ प्रभू... Click

नैन हीन को राह दिखा प्रभू (२)
पग-पग ठोकर खाऊँ मैं
नैन हीन को राह दिखा प्रभू पग-पग ठोकर खाऊँ मैं
नैन हीन को

चहूँ ओर मेरे घोर अंधेरा भूल ना जाऊँ द्वार तेरा (२)
एक बार प्रभू हाथ पकड़ लो (३)
मन का दीप जलाऊँ मैं
प्रभू -
नैन हीन को राह दिखा प्रभू पग-पग ठोकर खाऊँ मैं
नैन हीन को

तुम्हरी नगरिया की कठिन डगरिया (२)
चलत चलत गिर जाऊँ मैं, प्रभू
नैन हीन को राह दिखा प्रभू पग-पग ठोकर खाऊँ मैं
नैन हीन को राह दिखा प्रभू

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

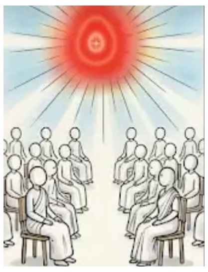

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे रूहानी बच्चों, आत्माओं ने गीत सुना। किसने कहा? आत्माओं के रूहानी बाप ने। रूहानी बाप को रूहानी बच्चों ने कहा बाबा। उनको ईश्वर भी कहा जाता, पिता भी कहा जाता।

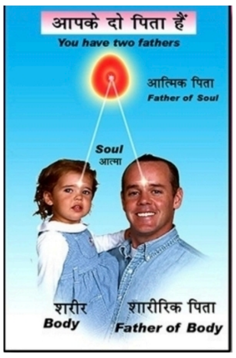

कौन सा पिता? परमपिता। बाप हैं दो। एक लौकिक दूसरा पारलौकिक । लौकिक बाप के बच्चे पारलौकिक बाप को पुकारते हैं। हे बाबा, बाबा का नाम? शिव। वह शिव निराकारी पूजा जाता है।

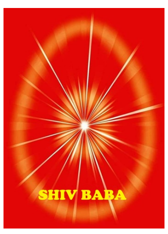

उनको कहा जाता है सुप्रीम फादर। लौकिक बाप को सुप्रीम नहीं कहा जाता। ऊंच ते ऊंच सभी आत्माओं का बाप एक ही है। सभी जीव आत्मायें उस बाप को याद करती हैं।

आत्मायें यह भूल गई हैं। कि हमारा बाप कौन है? पुकारते हैं ओ गॉड फादर, हम नयन हीन को नयन दो तो हम अपने बाप को पहचानें।

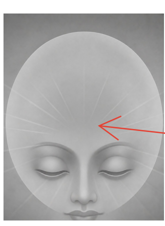

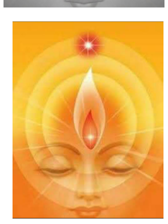

भक्ति मार्ग में हम अन्धे बन ठोकरें खाते रहते हैं, अब इन ठोकरों से छुड़ाओ। बाप ही कल्प-कल्प आकर भारत को हेविन बनाते हैं। अब कलियुग है, सतयुग आने वाला है।

कलियुग और सतयुग के बीच को संगम कहा जाता है। यह है पुरुषोत्तम संगम।

बेहद का बाप आकर जो भ्रष्टाचारी बन गये हैं, उन्हों को श्रेष्ठाचारी, पुरुषोत्तम बनाते हैं। लक्ष्मी-नारायण

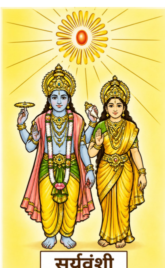

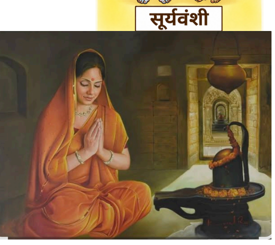

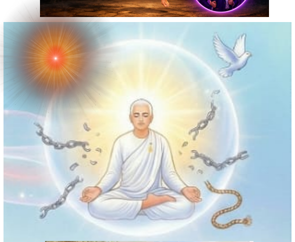

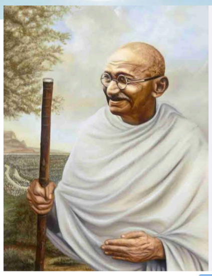

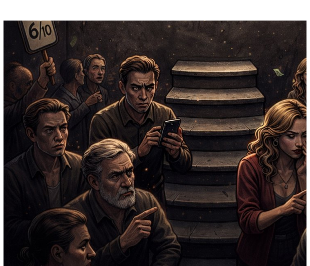

पुरुषोत्तम थे। लक्ष्मी-नारायण की डिनायस्टी का राज्य था। यह बाप आकर स्मृति दिलाते हैं। तुम भारतवासी आज से 5 हजार वर्ष पहले स्वर्गवासी थे, अब नर्कवासी हो। आज से 5 हजार वर्ष पहले भारत हेविन था, भारत की बहुत महिमा थी। सोने हीरे के महल थे। अब कुछ नहीं है। उस समय और कोई धर्म नहीं था, सिर्फ सूर्यवंशी थे। चन्द्रवंशी पीछे आते हैं। बाप समझाते हैं तुम ही सूर्यवंशी थे। अब तक लक्ष्मी-नारायण के मन्दिर बनाते रहते हैं। परन्तु लक्ष्मी-नारायण का राज्य कब था? कैसे राज्य पाया? यह किसको पता नहीं, पूजा करते हैं परन्तु जानते नहीं तो ब्लाइन्ड फेथ हुआ ना। शिव की, लक्ष्मी-नारायण की पूजा करते हैं, बायोग्राफी कोई नहीं जानते। भारतवासी खुद कहते हैं हम पतित हैं। हे पतित-पावन बाबा आओ, आकर हमको दु:खों से, रावण राज्य से लिबरेट करो। बाप आकर सबको लिबरेट करते हैं। बच्चे जानते हैं कि सतयुग में एक ही राज्य था। कांग्रेसी लोग अथवा बापू जी भी यही मांगते थे कि हमको फिर से रामराज्य चाहिए। हम स्वर्गवासी बनने चाहते हैं। अब नर्कवासियों का क्या हाल है, देख रहे हो? इनको कहा जाता है हेल, डेविल वर्ल्ड।

यही भारत डीटी वर्ल्ड था। अब डेविल वर्ल्ड बन गया है।

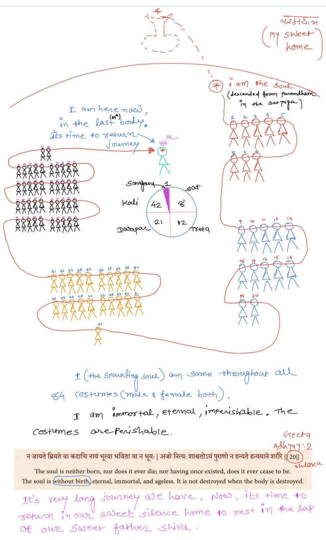

बाबा समझाते हैं तुमने 84 जन्म लिए हैं, न कि 84 लाख। यह तो शास्त्रों में गपोड़े लगा दिये हैं। आज से 5 हजार वर्ष पहले सद्गति मार्ग था। वहाँ न भक्ति, न दु:ख का नामनिशान था, उनको सुखधाम कहा जाता है। बाप समझाते हैं तुम असुल में शान्तिधाम के रहने वाले हो। तुम यहाँ पार्ट बजाने आये हो। पुनर्जन्म 84 होते हैं, न कि 84 लाख। अब बेहद का बाप आया है, तुम बच्चों को बेहद का वर्सा देने। बाप तुम आत्माओं से बात करते हैं। और सतसंगों में मनुष्य, मनुष्य को भक्ति की बातें सुनाते हैं।

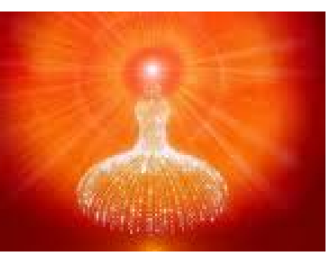

आधाकल्प जब भारत स्वर्ग था, एक भी पतित नहीं था। अब एक भी पावन नहीं है। यह है पतित दुनिया। बाप समझाते हैं - गीता में श्रीकृष्ण भगवानुवाच लिख दिया है। श्रीकृष्ण भगवान नहीं है, न कि उसने गीता सुनाई है। यह लोग अपने धर्म शास्त्र को भी नहीं जानते। अपने धर्म को ही भूल

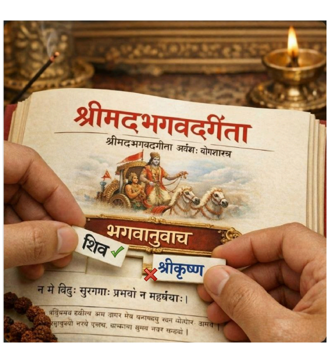

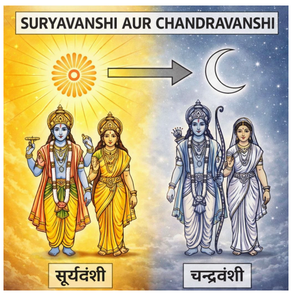

गये हैं। धर्म मुख्य हैं 4, पहले आदि सनातन देवी-देवता धर्म सूर्यवंशी, पीछे चन्द्रवंशी, दोनों को मिलाकर कहते हैं देवी-देवता धर्म। वहाँ दु:ख का नाम नहीं था। 21 जन्म तुम सुखधाम में थे। फिर रावणराज्य, भक्तिमार्ग शुरू होता है। शिवबाबा कब आते हैं? जब रात होती है। भारतवासी घोर अन्धियारे में आ जाते हैं तब बाबा आते हैं। गुड़ियों की पूजा करते रहते हैं। एक की भी बायोग्राफी नहीं जानते। भक्ति मार्ग में अनेक धक्के खाते हैं, तीर्थो पर जाओ फेरा लगाओ। कोई प्राप्ति नहीं है। बाप कहते हैं - मैं आकर तुमको ब्रह्मा द्वारा यथार्थ ज्ञान सुनाता हूँ। पुकारते हैं कि हमको सुखधाम और शान्तिधाम की राह बताओ।

Thank you so much मेरे मीठे बाबा...

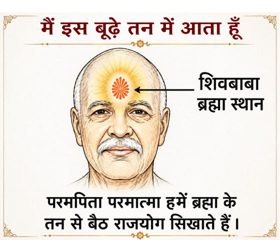

बाप कहते हैं – आज से 5 हजार वर्ष पहले हमने तुम्हें बहुत साहूकार बनाया था। इतना धन दिया फिर कहाँ गँवाया? तुम कितने साहूकार थे। भारत कौन कहलावे। भारत ही सबसे ऊंचे से ऊंचा खण्ड था। वास्तव में सबका यह तीर्थ है क्योंकि पतित-पावन

बाप का बर्थ प्लेस है। जो भी धर्म वाले हैं सभी की बाप आकर सद्गति करते हैं। अब रावण का राज्य सारी सृष्टि में है सिर्फ लंका में नहीं। जब सूर्यवंशी राज्य था तब यह विकार नहीं थे। भारत वाइसलेस था, अब विशश है। सब नर्कवासी हैं। सतयुग में जो दैवी सम्प्रदाय थे, वे फिर 84 जन्म भोग आसुरी सम्प्रदाय बने हैं फिर दैवी सम्प्रदाय बनने हैं। भारत बहुत साहूकार था। अब गरीब बना है इसलिए भीख मांग रहे हैं। बाप तुम गरीब बच्चों को स्मृति दिलाते हैं "बच्चे, तुम कितने सुखी थे। तुम्हारे जैसा सुख किसको मिल नहीं सकता। धरती, आसमान सब तुम्हारे हाथों में था।" शास्त्रों में कल्प की आयु लम्बी बताकर सभी को कुम्भकरण की आसुरी नींद में सुला दिया है। यह भारत शिवबाबा का स्थापन किया हुआ शिवालय था। वहाँ पवित्रता थी, उस नई दुनिया में देवी-देवता राज्य करते थे। मनुष्य तो यह भी नहीं जानते कि राधे-कृष्ण का आपस में क्या सम्बन्ध है। दोनों अलग-अलग राजधानी के थे फिर स्वयंवर के बाद लक्ष्मी-नारायण बनें। यह ज्ञान कोई मनुष्य मात्र में नहीं है। स्प्रीचुअल नॉलेज सिर्फ एक बाप ही देते हैं। अब बाप कहते हैं - आत्म-अभिमानी

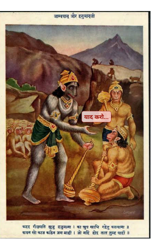

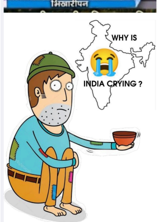

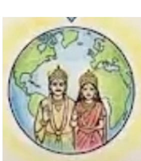

Exclusive Authority of Shiv baba

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

But we know, How Lucky & Great we are..!

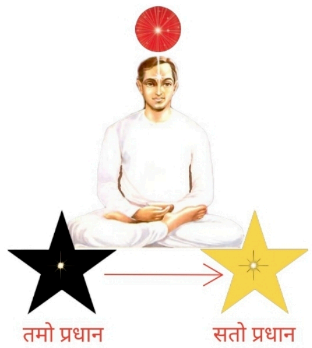

13-10-2026 प्रात: शान्ति "बापदादा" मधुबन

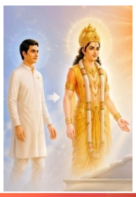

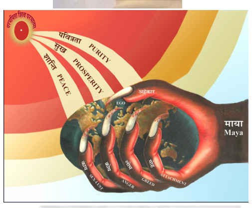

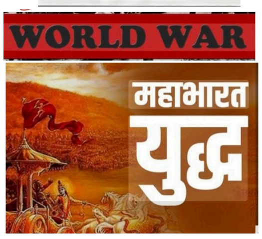

बनो। मुझ अपने परमपिता को याद करो। याद से तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। तुम यहाँ आते हो मनुष्य से देवता अथवा पतित से पावन बनने। अब यह है रावण राज्य। भक्ति में रावण राज्य शुरू होता है। सब भक्ति करने वाले रावण के पंजे में हैं। सारी दुनिया 5 विकारों रूपी रावण की कैद में है, शोक वाटिका में है। बाप आकर सबको लिबरेट कर गाइड बन साथ ले जाते हैं। उसके लिए यह महाभारत लड़ाई है, जो 5 हजार वर्ष पहले लगी थी, अब बाप फिर से स्वर्ग बना रहे हैं। ऐसे नहीं जिनको

Mind very well...

धन बहुत है, वह स्वर्ग में हैं। अभी है ही नर्क। पतित-पावन बाप को कहा जाता है, न कि नदी को। यह सब है भक्ति मार्ग। यह बातें बाबा ही आकर समझाते हैं। अब यह तो जानते हो एक है लौकिक बाप, दूसरा है पारलौकिक, तीसरा है अलौकिक। अब पारलौकिक बाप शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण धर्म स्थापन करते हैं। ब्राह्मणों को देवता बनाने के लिए राजयोग सिखलाते हैं। आत्मा ही पुनर्जन्म लेती है। आत्मा ही कहती है मैं एक शरीर छोड़ दूसरा लेती हूँ। बाप कहते हैं -अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो तो तुम पावन बनेंगे। कोई भी देहधारी

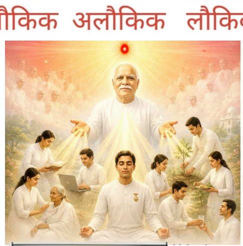

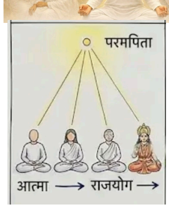

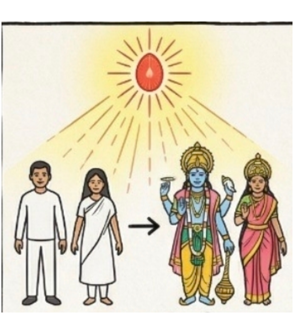

13-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

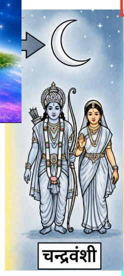

को याद नहीं करो। अब मृत्युलोक का अन्त है, अमरलोक की स्थापना हो रही है। बाकी सब अनेक धर्म खलास हो जायेंगे। सतयुग में एक ही देवी-देवता धर्म था फिर चन्द्रवंशी राम सीता त्रेता में थे। तुम बच्चों को सारे चक्र की याद दिलाते हैं। शान्तिधाम और सुखधाम की स्थापना बाप ही करते हैं। मनुष्य, मनुष्य को सद्गति दे नहीं सकते। वह सब है भक्ति मार्ग के गुरू।

ये तो पक्का कर लो..

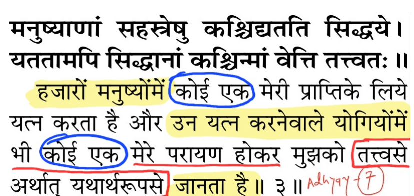
मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये।
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः॥
हजारों मनुष्योंमें कोई एक मेरी प्राप्तिके लिये यत्न करता है और उन यत्न करनेवाले योगियोंमें भी कोई एक मेरे परायण होकर मुझको तत्त्वसे अर्थात् यथार्थरूपसे जानता है॥ ३॥

अभी तुम हो ईश्वरीय सन्तान। बाबा से राज्य भाग्य ले रहे हो। यह राजधानी स्थापन हो रही है। प्रजा तो बहुत बननी है। कोटों में कोई राजा बनते हैं। सतयुग को कहा जाता है फूलों का बगीचा। अब है कांटों का जंगल। रावण राज्य बदल रहा है। विनाश होना है। यह ज्ञान अब तुमको मिल रहा है। लक्ष्मी-नारायण को यह ज्ञान नहीं रहता। प्राय: लोप हो जाता है। भक्ति मार्ग में बाप को कोई भी यथार्थ नहीं जानते। बाप है रचयिता। ब्रह्मा विष्णु शंकर भी रचना है। सर्वव्यापी कहने से वर्से का हक खत्म हो जाता है।

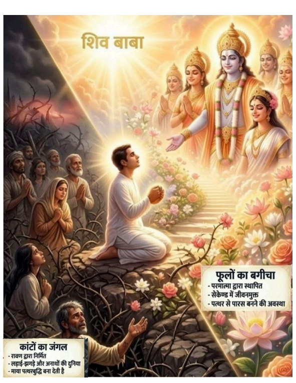

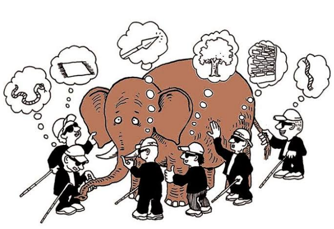

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

13-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

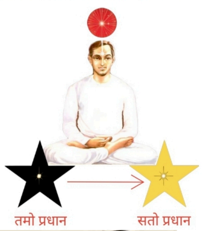

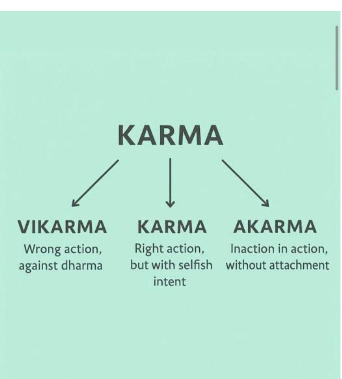

बाबा आकर सबको वर्सा देते हैं। 84 जन्म वही लेते हैं जो पहले-पहले सतयुग में आते हैं। क्रिश्चियन लोग करके 40 जन्म लेते होंगे। एक भगवान को ढूँढने के लिए कितने धक्के खाते हैं। अब तुम धक्के नही खायेंगे। एक बाप को याद करो तो तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। यह है यात्रा। यह है गॉड फादरली युनिवर्सिटी। तुम्हारी आत्मा पढ़ती है। साधू -सन्त कह देते आत्मा निर्लेप है। लेकिन आत्मा ही कर्मों अनुसार दूसरा जन्म लेती है। आत्मा ही अच्छा वा बुरा कर्म करती है। इस समय (कलियुग में) तुम्हारे कर्म विकर्म होते हैं, सतयुग में तुम्हारे कर्म, अकर्म होते हैं। वहाँ विकर्म होता नहीं। वह है पुण्य आत्माओं की दुनिया। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

Points: ज्ञान योग धा

13-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

धारणा के लिए मुख्य सार:-

None but Only One

1) एक बाप से बेहद का वर्सा लेना है। श्रेष्ठ कर्म करने हैं। जब बाप मिला है तो किसी भी प्रकार के धक्के नहीं खाने हैं।

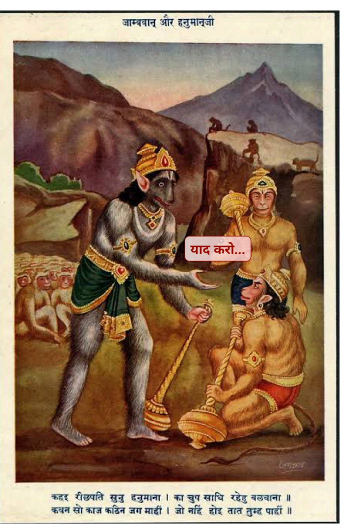

2) बाप ने जो स्मृति दिलाई है, उसे स्मृति में रख अपार खुशी में रहना है। कोई भी देहधारी को याद नहीं करना है।

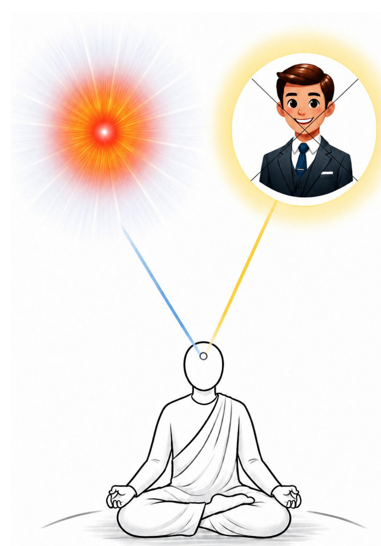

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

13-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- स्नेह के पीछे सर्व कमजोरियों को कुर्बान करने वाले समर्थी स्वरूप भव

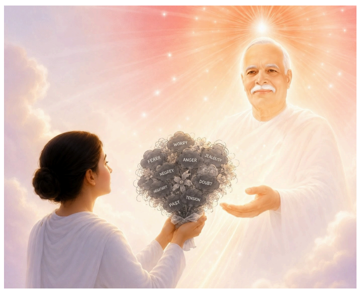

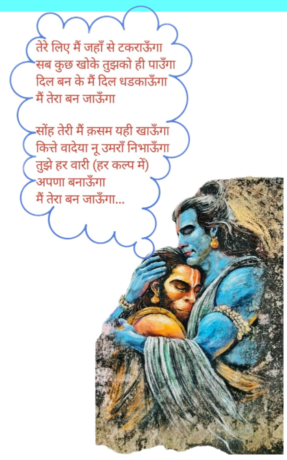

M.M.M.....imp.

स्नेह की निशानी है कुर्बानी। स्नेह के पीछे कुर्बान करने में कोई मुश्किल वा असम्भव बात भी सम्भव और सहज अनुभव होती है।

तो समर्थी स्वरूप के वरदान द्वारा सर्व कमजोरियों को मजबूरी से नहीं दिल से कुर्बान करो क्योंकि सत्य बाप के पास सत्य ही स्वीकार होता है।

ये पक्का समझ लो..

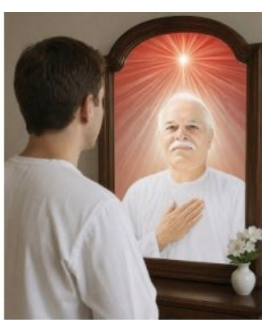

तो सिर्फ बाप के स्नेह के गीत नहीं गाओ लेकिन स्वयं बाप समान अव्यक्त स्थिति स्वरूप बनो जो सब आपके गीत गायें।

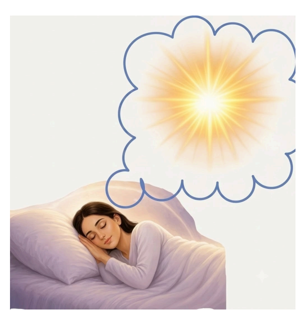

स्लोगन:- संकल्प वा स्वप्न में भी एक दिलाराम की याद रहे तब कहेंगे सच्चे तपस्वी।

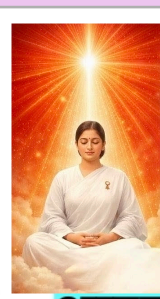

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

13-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

मातेश्वरी जी के अनमोल महावाक्य

मनुष्य की एम ऑबजेक्ट क्या है? उसे प्राप्त करने का यथार्थ तरीका

हरेक मनुष्य को यह सोचना जरूर है, "अपनी अच्छी जीवन बनाने के लिये क्या उचित है? मनुष्य की लाइफ किसलिए है, उसमें क्या करना है?" अब अपनी दिल से पूछें कि वो मेरी जीवन में पलटा (परिवर्तन) हो रहा है? मनुष्य जीवन में पहले तो नॉलेज चाहिए फिर इस जीवन की एम ऑबजेक्ट क्या है? यह तो जरूर मानेंगे कि इस जीवन को सर्वदा सुख और शान्ति चाहिए। पुछो अपने आप से... क्या अभी वो मिल रही है? इस घोर कलियुग में तो दु:ख अशान्ति के सिवाए और कुछ है ही नहीं, अब सोचना है सुख शान्ति मिलेगी कैसे? सुख और शान्ति यह दो शब्द जो निकले हैं, वो जरूर इसी दुनिया में कब हुए होंगे, तभी तो इन चीज़ों की मांगनी करते हैं। अगर कोई

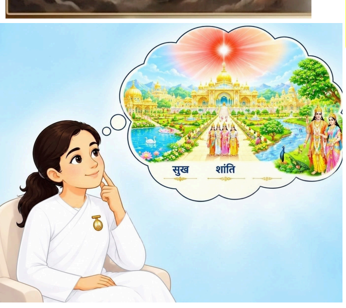

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

13-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

मनुष्य ऐसे कहे कि हमने ऐसी दुनिया देखी ही नहीं तो फिर उस दुनिया को तुम कैसे मानते हो? इस पर समझाया जाता है कि यह दिन और रात जो दो शब्द हैं, तो जरुर रात और दिन चलता होगा। ऐसे कोई नहीं कह सकते कि हमने देखी ही रात है तो दिन को मानूं कैसे? लेकिन जब दो नाम हैं, तो उनका पार्ट भी होगा। वैसे हमने भी सुना है, कि इस कलियुग से कोई ऊंची स्टेज भी थी जिसको सतयुग कहा जाता है! अगर ऐसा ही समय चलता रहे तो फिर उस समय को सतयुग नाम क्यों दिया गया! तो यह सृष्टि अपनी स्टेज बदलती रहती है, जैसे किशोर, बाल, युवा, वृद्ध... बदलते रहते हैं, वैसे सृष्टि भी बदलती रहती है। आज की जीवन और उस जीवन में कितना फर्क है। तो उस श्रेष्ठ जीवन को बनाने का प्रयत्न करना है।

What a logic..!

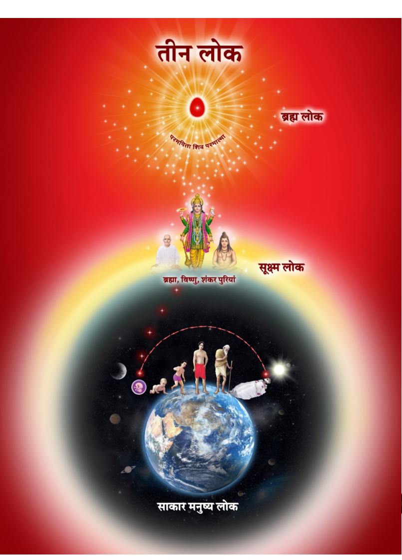

निराकारी दुनिया, आकारी दुनिया और साकारी दुनिया का विस्तार

तुम बच्चे जानते हो पुनर्जन्म तो किसका भी बंद नहीं होता। अपना-अपना पार्ट सब बजाते हैं। आवागमन से कभी छूटना नहीं है। इस समय करोड़ों मनुष्य हैं और भी आते रहेंगे, पुनर्जन्म लेते रहेंगे। फिर फर्स्ट फ्लोर खाली होगा। मूलवतन है

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp. 4

15-04-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

फर्स्ट फ्लोर, सूक्ष्मवतन है सेकण्ड फ्लोर। यह है थर्ड फ्लोर अथवा इनको ग्राउण्ड फ्लोर कहो। दूसरा कोई फ्लोर है नहीं। वह समझते हैं स्टार्स में भी दुनिया है। ऐसे है नहीं। फर्स्ट फ्लोर में आत्मायें रहती हैं। बाकी मनुष्यों के लिए तो यह दुनिया है।

तुम बेहद के वैरागी बच्चे हो, तुम्हें इस पुरानी दुनिया में रहते हुए भी इन आंखों से सब कुछ

13-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

इस पूरे ब्रह्माण्ड के अन्दर तीन दुनियायें हैं एक है निराकारी दुनिया, दूसरी है आकारी, तीसरी है साकारी। अब यह तो जान लिया कि निराकार सृष्टि में तो आत्मायें निवास करती हैं और साकार सृष्टि में साकार मनुष्य सम्प्रदाय निवास करते हैं। बाकी है आकारी सूक्ष्म सृष्टि, अब विचार चलता है क्या यह आकारी सृष्टि सदा ही है या कुछ समय उसका पार्ट चलता है? दुनियावी मनुष्य तो समझते हैं सूक्ष्म दुनिया कोई ऊपर है, वहाँ फरिश्ते रहते हैं, उसको ही स्वर्ग कहते हैं। वहाँ जाकर सुख भोगेंगे लेकिन अब यह तो स्पष्ट है कि स्वर्ग और नर्क इस सृष्टि पर ही होता है। बाकी यह जो सूक्ष्म आकारी सृष्टि है, जहाँ शुद्ध आत्माओं का साक्षात्कार होता है, वो तो द्वापर से लेकर शुरू हुए हैं। जब भक्तिमार्ग शुरू होता है तो इससे सिद्ध है निराकार सृष्टि और साकार सृष्टि सदा है ही है। बाकी सूक्ष्म दुनिया सदा तो नहीं कहेंगे, उसमें भी खास ब्रह्मा, विष्णु, शंकर का साक्षात्कार इसी समय हमको होता है क्योंकि इसी समय परमात्मा तीन कर्तव्य करने के लिए तीन रूप रचते हैं। अच्छा, ओम् शान्ति।

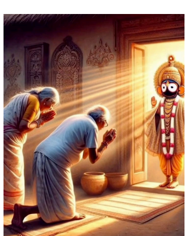

एक समय की बात है। एक नदी में एक महात्मा स्नान कर रहे थे। तभी एक बिच्छू जो पानी में डूब रहा था, उसे बचाते हुए बिच्छु ने महात्मा को डंक मार दिया। महात्मा ने उसे कई बार बचाने की कोशिश की। बिच्छू ने उन्हें बार-बार डंक मारा। अंतत: महात्मा ने उसे बचाकर नदी के किनारे रख दिया। थोड़ी दूर खड़े यह सब महात्मा के शिष्य देख रहे थे। जैसे ही वे नदी से बाहर आये तो शिष्यों ने पूछा कि जब वह बिच्छू आपको बार-बार डंक मार रहा था तो आपको उसे बचाने की क्या आवश्यकता थी।

तब महात्मा ने कहा- बिच्छू एक छोटा जीव है, उसका कर्म काटना है, जब वह अपना कर्तव्य नहीं भूला, तो मैं मनुष्य हूँ मेरा कर्तव्य दया करना है तो मैं अपना कर्तव्य कैसे भूल सकता हूँ।

शिक्षा- मार्ग कितना भी कठिन क्यों न हों, मनुष्य को कभी अपना कर्तव्य नहीं भूलना चाहिए।

13-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

ये अव्यक्त इशारे

परोपकार की भावना से सम्पन्न बन

अपकारी पर भी उपकार करो

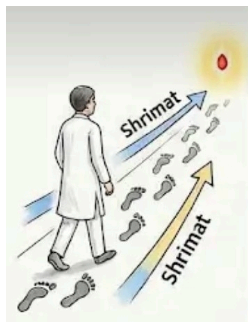

बापदादा सदा श्रीमत देते हैं कि मन में हर आत्मा के प्रति शुभ भावना और शुभ कामना रखो अपकारी पर भी उपकार की वृत्ति रखो, संकल्प सदा सर्व के प्रति श्रेष्ठ हो, नि:स्वार्थ हो, सदा दातापन की भावना हो।

सदा स्व परिवर्तन अथवा स्व के श्रेष्ठ कर्मों द्वारा औरों को श्रेष्ठ कर्म की प्रेरणा देने वाले कर्म हों, तब कहेंगे परोपकारी।

Points:

M.imp.

If you wish to stay connected, Here is the link

WhatsApp

TELEGRAM

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans Sept 26 → Click

All अव्यक्त इशारे Sept 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

Subtle Psychology

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है। और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वत: ही आपसे विदाई ले जायेंगे
क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है वाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026

अमृतवेला और साकार बापदादा के महावाक्य

12.2 अमृतवेले की विशेषतायें

(क) जो बाप का मुख्य फ़रमान है **बच्चे, अमृतवेले उठ कर बाप को याद करो, इस मुख्य फ़रमान को पालन कर सवेरे-सवेरे फ्रेश हो। मुकर्र टाइम पर याद की यात्रा में रहो, सपूत वा फ़रमानवरदार बनो तब जाकर राजा बनेंगे।** कपूत बच्चे तो झाड़ू लगायेंगे। तकदीरवान बच्चे सवेरे-सवेरे उठ कर बाप को बहुत प्यार से याद करेंगे, बाबा से मीठी-मीठी बातें करेंगे। पास विद् ऑनर होने का पुरुषार्थ कर स्वयं को राजाई के लायक बनायेंगे। **बाप से जितना प्रीत-बुद्धि होंगे उतना फिर ऊँच पद पायेंगे।** इसलिए सवेरे उठ कर बहुत प्यार से बाप को याद करना है। भल प्रेम के आँसू भी आयें क्योंकि बहुत समय के बाद बाप आकर मिले हैं। अब याद की रफ्तार तेज होनी चाहिए। **तेज याद करने वाले का ही ऊँच नाम होगा। वही विजयमाला का दाना बनेंगे।**

Simple Math..

ये पक्का समझ लो..

(ख) बच्चे, रात को बाप और वर्से को याद करते, स्वदर्शन चक्र फिराते जब

देखो नींद आती है, तो सो जाओ। फिर अन्त मति सो गति हो जायेगी। फिर सवेरे-सवेरे उठेंगे तो वही प्वाइन्ट्स याद आती रहेंगी। ऐसे **अभ्यास करते-करते तुम नींद को जीतने वाले बन जायेंगे। जो करेगा सो पायेगा।** करने वाले का देखने में आता है, चलन प्रसिद्ध होती है। नींद को जीतने वाले बनो, तो तुम बाप के नज़दीक आते जायेंगे।

(ग) बच्चों को समझाया जाता है कि दूसरों को करेन्ट देना है, तो रात्रि को भी जागो, सवेरे उठ कर जितना बाप को याद करेंगे उतना कशिश होगी, बाबा भी लाइट देंगे।